SEMESTER -1

MJC-1 : हिंदी साहित्य का इतिहास : आदिकाल से रीतिकाल तक

COURSE OBJECTIVES

हिन्दी साहित्य के हजार वर्षों से अधिक के इतिहास के प्रारम्भिक एवं संक्रमणकालीन दौर के निर्माण की गाथा से परिचित कराना इस पत्र का उद्देश्य है। भाषा-साहित्य के व्यापक परिवर्तनों से भरे इस दौर के अध्ययन से किसी भी भाषा-साहित्य के निर्माण की प्रक्रिया से भलीभांति अवगत हुआ जा सकता है।

हिन्दी भक्तिकाव्य भारत की सभी भाषाओं के साहित्य में व्याप्त अखिल भारतीय आंदोलन का हिस्सा था। इसके साहित्य के निर्माण में विभिन्न धर्मों, संप्रदायों एवं जातियों का अभूतपूर्व योगदान रहा है। भक्तिकाव्य भारत की सामासिक संस्कृति का सर्वोत्तम उदाहरण है। इसका परिचय इस पत्र के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है।

	MJC-1 : हिंदी साहित्य का इतिहास : आदिकाल से रीतिकाल तक (Theory: 6 Credits)		
Unit	**Topic to be covered**	**No. of Lectures**	**L-T-P 6-1-0 Per week**
1.	• हिंदी साहित्येतिहास दृष्टि : इतिहास और साहित्य का इतिहास ; काल विभाजन एवं नामकरण संबंधी समस्याएँ • आदिकालीन साहित्य: नामकरण और काल- निर्धारण • आदिकालीन साहित्य की राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक पृष्ठभूमि	15	
2	• आदिकालीन काव्य के विभिन्न रूपों का समीक्षात्मक परिचय : सिद्ध-जैन काव्य, रासो काव्य, लौकिक काव्य एवं अन्य काव्य ; आदिकालीन काव्य की महत्वपूर्ण विशेषताएं एवं प्रवृत्तियां	15	
3	• भक्तिकालीन साहित्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि • भक्तिकालीन काव्य के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार • हिन्दी भक्तिकालीन काव्य : अखिल भारतीय परिप्रेक्ष्य	12	
4	• भक्तिकालीन काव्य की प्रमुख धाराएं और प्रवृत्तियाँ : उनके आपसी संबंध और वैशिष्ट्य	12	
5	• रीतिकालीन काव्य : ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, नामकरण एवं काल-निर्धारण • रीतिकालीन काव्य की प्रमुख धाराएँ और उसके महत्वपूर्ण कवि	09	

6.	• रीतिकालीन काव्य की भाषिक-साहित्यिक विशेषताएं और प्रवृत्तियाँ • आदिकालीन एवं मध्यकालीन साहित्य का समग्र मूल्यांकन	12	
	कुल योग	**75**	

COURSE OUTCOMES - इस पत्र के अध्ययन से हिन्दी साहित्य की प्रारम्भिक अवस्थाओं / स्थितियों का परिचय मिलेगा। भारतीय साहित्य की परम्पराओं से हिन्दी साहित्य को विरासत के रूप में साहित्य और संस्कृति की कौन-कौन सी प्रवृत्तियाँ प्राप्त हुई - इसका पता चलेगा। भक्ति आन्दोलन से जिस गंगा-जमुनी भारतीय संस्कृति का प्रचलन हुआ उसका ज्ञान विद्यार्थियों को व्यावहारिक रूप से साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से प्राप्त होगा।

सहायक पुस्तकें –

1. हिंदी साहित्य का इतिहास : आचार्य रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
2. हिंदी साहित्य की भूमिका : आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
3. हिंदी साहित्य का आदिकाल :आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना
4. हिंदी साहित्य का इतिहास :लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
5. हिंदी साहित्य का इतिहास : संपादक डॉ नगेंद्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
6. हिंदी साहित्य का इतिहास दर्शन : नलिनविलोचन शर्मा, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना
7. साहित्य की इतिहास दृष्टि : मैनेजर पांडेय, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
8. हिन्दी साहित्य संवेदना का विकास : रामस्वरुप चहतुर्वेदी